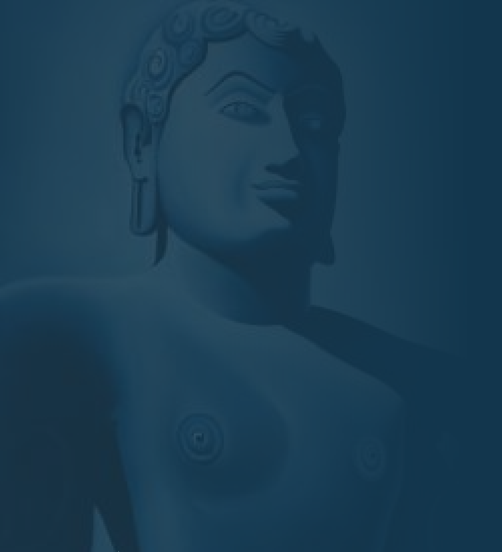

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजन

रचनाकार

कवि द्यानतरायजी

(अडिल्ल)

प्रथम देव अरहंत सुश्रुत सिद्धान्त जू।
गुरु निरग्रंथ महंत मुकतिपुर-पंथ जू।।
तीन रतन जगमाहिं सु ये भवि ध्याइये।
तिनकी भक्ति-प्रसाद परम-पद पाइये।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(दोहा)

पूजों पद अरहंत के, पूजों गुरुपद सार।
पूजों देवी सरस्वती, नित प्रति अष्ट प्रकार॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सुरपति उरग नरनाथ तिन करि, वन्दनीक सुपदप्रभा।
अति शोभनीक सुवरण उज्ज्वल, देख छवि मोहित सभा।।
वर नीर क्षीर-समुद्र घट भरि, अग्र तसु बहुविधि नचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।
मलिन वस्तु हर लेत सब, जल-स्वभाव मल छीन।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जे त्रिजग-उदर मँझार प्रानी, तपत अति दुद्धर खरे।
तिन अहित-हरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे।।
तसु भ्रमर-लोभित घ्राण पावन, सरस चन्दन घसि सचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।
चंदन शीतलता करै, तपत वस्तु परवीन।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

यह भव-समुद्र अपार तारण, के निमित्त सुविधि ठई।
अति दृढ़ परम पावन जथारथ, भक्ति वर नौका सही।।
उज्ज्वल अखंडित सालि तंदुल, पुंज धरि त्रयगुण जचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।
तंदुल सालि सुगंधि अति, परम अखंडित बीन।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपदप्राप्तये
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जे विनयवंत सुभव्य-उर-अंबुज प्रकाशन भानु हैं।
जे एक मुख चारित्र भाषत, त्रिजग माहिं प्रधान हैं।
लहि कुन्द-कमलादिक पहुप, भव-भव कुवेदन सों बचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।
विविध भाँति परिमल सुमन, भ्रमर जास आधीन।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अति सबल मद-कंदर्प जाको, क्षुधा-उरग अमान है।
दुस्सह भयानक तासु नाशन, को सुगरुड़ समान है।
उत्तम छहों रस युक्त नित, नैवेद्य करि घृत में पचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।
नाना विधि संयुक्त रस, व्यंजन सरस नवीन।
जासों पूजों पर मपद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्य: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

जे त्रिजग–उद्यम नाश कीने, मोह–तिमिर महाबली।
तिहि कर्मघाती ज्ञानदीप–प्रकाशज्योति प्रभावली।
इह भाँति दीप प्रजाल कंचन, के सुभाजन में खचूँ।
अरहंत श्रुत–सिद्धान्त गुरु–निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।
स्व–पर प्रकाशक ज्योति अति, दीपक तमकरि हीन।
जासों पूजों परम पद, देव–शास्त्र–गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरुभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जो कर्म-ईंधन दहन अग्निसमूह-सम उद्धत लसै।
वर धूप तासु सुगंधिता करि, सकल परिमलता हँसै।।
इह भाँति धूप चढ़ाय नित भव ज्वलन माहिं नहिं पचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धांत गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।
अग्नि माहिं परिमल दहन, चंदनादि गुण-लीन।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्मदहनाय
धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

लोचन सुरसना घ्राण उर, उत्साह के करतार हैं।
मोपै न उपमा जाय वरणी, सकल फल गुणसार हैं।
सो फल चढ़ावत अर्थपूरन, परम अमृतरस सचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धांत गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।
जे प्रधान फल-फल विषैं, पंचकरण-रस-लीन।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जल परम उज्ज्वल गन्ध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूँ।
वर धूप निर्मल फल विविध बहु, जनम के पातक हरूँ।
इह भाँति अर्घ्य चढ़ाय नित भवि, करत शिव-पंकति मचूँ।
अरहंत श्रुत-सिद्धान्त गुरु-निर्ग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।
वसुविधि अर्घ्य संजोय के, अति उछाह मन कीन।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

› õt Ir Xd-emñÌ-Jéä`m AZ¿`nXàmßV` A¿` {Zdnm_r{V ñdmhm&

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जयमाला

(दोहा)

देव-शास्त्र-गुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार।
भिन्न-भिन्न कहुँ आरती, अल्प सुगुण विस्तार॥

(पद्धरि)

चउ कर्मसु त्रेसठ प्रकृति नाशि, जीते अष्टादश दोषराशि।
जे परम सुगुण हैं अनंत धीर, कहवत के छ्यालिस गुणगंभीर॥

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

शुभ समवशरण शोभा अपार, शत इन्द्र नमत कर सीस धार।
देवाधिदेव अरहन्त देव, वन्दौं मन-वच-तन कर सुसेव।।
जिनकी धुनि ह्वै ओंकाररूप, निर-अक्षरमय महिमा अनूप।
दश-अष्ट महाभाषा समेत, लघु भाषा सात शतक सुचेत।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

सो स्याद्वादमय सप्त भंग, गणधर गूँथे बारह सुअंग।
रवि-शशि न हरैं सो तम हराय, सो शास्त्र नमों बहु प्रीति ल्याय।।
गुरु आचारज उवझाय साधु, तन नगन रत्नत्रय निधि अगाध।
संसार देह वैराग धार, निरवांछि तपैं शिव-पद निहार।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

गुण छत्तिस पच्चिस आठ–बीस, भव–तारन–तरन जिहाज ईस।
गुरु की महिमा वरनी न जाय, गुरुनाम जपों मन–वचन–काय॥

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला–
महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(सोरठा)

कीजे शक्ति प्रमान, शक्ति बिना सरधा धरैं।
'द्यानत' सरधावान, अजर-अमर पद भोगवैं ।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु